INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 2 | MARCH - 2022

'' महाकवि कवि जयशंकर प्रसाद के काव्य में धार्मिक प्रतीक''

रामिलन अहिरवार
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.).

सारांश –

महाकवि जयशंकर प्रसाद के अधिकांश काव्य पुरावृत्तों पर आधारित है, जिनमें पात्र घटनाएँ, सर्ग, शीर्षक आदि सभी प्रतीकात्मक हैं। प्रमुख रूप से प्रसाद कृत महाकाव्य कामायनी में धार्मिक प्रतीकों का आधार सर्वाधिक लिया गया है। पुरावृत्तों पर आधारित प्रस्तुत महाकाव्य में युगीन समस्याओं, युद्ध, शान्ति, मानवीय रूपों, खण्डित व्यक्तित्व, सांस्कृतिक मूल्य दृष्टि, संशय, नैराश्य एवं कुंठा आदि की प्रतीकों के अध्ययन से मार्मिक अभिव्यक्ति की गयी है। पौराणिक, धार्मिक प्रतीकों की नियोजना की दृष्टि से प्रस्तुत महाकाव्य विशेष महत्वपूर्ण हैं।

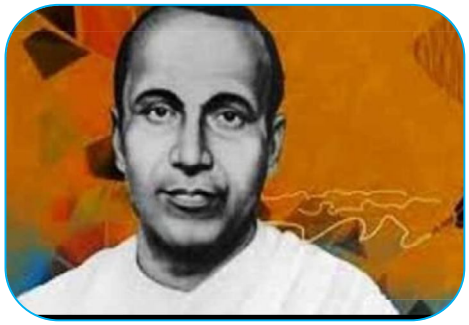

मुख्य शब्द – महाकवि जयशंकर प्रसाद, कामायनी, धार्मिक प्रतीक एवं सांस्कृतिक मूल्य।

प्रस्तावना –

कामायनी महाकाव्य के नायक महाराज मनु आधुनिक प्रजा का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे युगीन समस्याओं से जूझते, संदिग्ध संकल्पी जन के प्रतीक हैं। इस महाकाव्य में कवि प्रसाद ने पौराणिक चरित्रों को आधुनिक संचेतना के साथ सम्पृक्त कर प्रतीकों की नवीन सर्जना की है। प्रकृति के विविध उपादान भी यहाँ मनु के अन्र्मन की अभिव्यक्ति करते हैं।

चित्त की वृत्तियाँ जो मानव हृदय में हुआ करती हैं उन्हें भाव कहते हैं। यद्यपि प्राचीन साहित्य में इनको रस के अन्तर्गत 'संचारी' तथा 'स्थायी' नाम से स्थान मिला है पर वे भाव उतने ही में पूरे नहीं हो सकते, वे केवल उसके स्थूल तथा प्रधान भेद हैं और बहुत से चित्त के विकास जो अच्छे और बुरे सूक्ष्म रूप से हैं, समयानुकूल या कार्यवश उत्पन्न हुआ करते हैं, उनमें जो अच्छे हैं, उन्हें उत्कर्ष देना तथा दुर्वृत्तियों को दमन करना भावमयी कविता का मुख्य कार्य है। भावमयी कविता प्रायः दो प्रकार की दिखायी देती है, जैसे कि 'कलामूलक भाव' और 'भावमूलक कविता।' इन्दु कला 2 किरण 1 श्रावण शुक्ल 2 संवत् 1967 (1910 ई.) में ही भावात्मक कविता का सुन्दर और सटीक उदाहरण 'सांध्य तारा' भी छपी है जिसका छायावादी कवियों के अर्थ संकेतों और प्रतीकों में अर्थ सन्निधान का कलात्मक और रचनात्मक मूल्य है।

इन्दु 1, छठी किरण में सम्वत 1966 'वनवासिनी बाला' शीर्षक से प्रकाशित 'वन मिलन' में प्रसाद की कल्पना और वर्णनात्मक क्षमता अधिक विकसित है। 'अयोध्या का उद्धार' की तुलना में नवीनता भी अधिक है। प्रसाद ने इसमें प्रियम्वदा और अनसूया के उलाहने के अतिरिक्त आश्रम और नगर, तथा सहजता और बनावट के द्वैत का उपयोग करते हुए एक तनाव भी उत्पन्न करने का प्रयत्न किया है। आश्रम चित्रण में भी विस्तार और सांकेतिकता है। शाकुन्तल के अंत में मरीचि गालव को कण्व ऋषि की शकुन्तला के सुखी जीवन की सूचना पहुंचाने के लिए आदेश देते हैं। इस संकेत के आधार पर प्रसाद ने प्रेम, स्नेह की कथा का कल्पना से विकास किया है। कालिदास प्रकृति प्राणि और मनुष्य की पारस्परिकता का संकेत करते हैं तो प्रसाद मानवीय मूल्यवत्ता आविष्कृत करते हैं।

शकुन्तला, दुष्यंत और बीच में भरत उन्हें धर्म शान्ति और आनन्द की भाँति लगते हैं। तपोवन में इनका होना उन्हें एक प्रकार के मूल्य योग लगता है। प्रसाद की यह जीवन दृष्टि अनुभव, अध्ययन और मनन से जीवन दर्शन या विचारधारा का रूप धारण करती है। यही जीवन दृष्टि उन्हें विषमता और शोषण रहित वर्ग विहीन स्वप्नलौकिक तपोवन में पहुँचाती है। कालिदास का यह प्रारम्भिक प्रभाव अंततः अनेक रूपों से गुजर कर, अनुभव से सीझ कर कामायनी में एक नये रूप में अवतरित होता है। इस अर्थ में प्रसाद एकसाधक की तरह अपने को साधते हुए, तपते तपाते और तापते हुए – निरंतर विकसित करते हैं।

'चित्राधार' काव्य में अध्योध्या का उद्धार कवि की धार्मिक प्रतीकात्मक कविता है। महाराज रामचन्द्र के बाद कुश को कुशावती और लव को श्रावस्ती इत्यादि राज्य मिले तथा अयोध्या उजड़ गई। वाल्मीकि रामायण में किसी ऋषभ नामक राजा द्वारा उसके फिर से बसाए जाने का पता मिलता है; परन्तु महाकवि कालिदास ने अयोध्या का उद्धार कुश द्वारा होना लिखा है। उत्तर काण्ड के विषय में लोगों का अनुमान है कि वह बहुत पीछे बना। हो सकता है कि कालिदास के समय में ऋषभ द्वारा अयोध्या का उद्धार होना न प्रसिद्ध रहा हो। अस्तु, इसमें कालिदास का ही अनुसरण किया गया है। अयोध्या धार्मिक धाम का प्रतीक है। निम्न पंक्तियों में पावनता का कवि ने बोध कराया है –

''रघु, दिलीप, अज आदि नृप, दशरथ राम उदार।
पाल्यो जाको सदय ह्वै, तासु करहु उद्धार।।
निज पूर्वज–गन की विमल– कीरति हू बचि जाय।
कुमुद्वती सम सुन्दरी, औरहु लाभ लखाय।''

धर्म भारतीय जीवन और संस्कृति का अभिन्न अंग है। प्रसाद के काव्य में धर्म सम्बन्धी पूजा सामग्री का प्रतीक रूप में ग्रहण किया गया है –

''यज्ञ–प्रज्ज्वलित बन्हि, लखे सब ही प्रणाम किय।
कण्व–महर्षि अनन्दित को अभिवन्दन हू किय।।
शकुन्तला कर जोरि पिता सों हिय समुचाती।
कह्यो– ''विनय करिबो–कछु है पै नहिं कहि आती।।''

कवि प्रसाद ने गंगा, यमुना के संगम क्षेत्र को पवित्रता का प्रतीक स्वीकार किया है। यथा –

''गंगा यमुना के संगम सों प्रेम की धारा।
सो सींचो या अन्य देश को मधुर अपारा।।''

प्रसाद के काव्य में पूजा के ये क्षेत्र आस्था, विश्वास और मनुष्य के भीतर निहित देवत्व के प्रतीक के रूप में आए हैं। प्रसाद की निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए –

''उपाधि है जीवन जासु जाव की।
महाब्धि ह्वै राखत सत्य सींव को।।
असीम आनन्द तरंग पूर है।
प्रसन्न ''कीलाल'' सुविश्व मूर है।।
विशाल ज्वालावलि सों प्रभा भरी।
अमन्द आलोकहु ते जु सुन्दरी।।
हविष्य को चारु सुगन्ध है खरी।
लसै सु ''वैश्वानर'' मूर्ति माधुरी।।''

''विनय' शीर्षक कविता में कवि का धार्मिक प्रतीक क्षीर, पय कल्पवृक्ष, परमेश्वर आदि शब्दों में आए हैं –

''जो पुण्य छीर पाय पावन को विचारै।
आनन्द के तरल वीचिन में बिहारै।।
जो कल्पवृक्ष नित फूलत मोद भीने।
जो देव स्वच्छ मंगल हैं नवीने।।
संसार को सदय पालत जौन स्वामी।
वा शक्तिमान परमेश्वर को नमामी।।''

चातक के चित्त की एकाग्रता को कवि प्रसाद ने धार्मिक प्रतीक का स्वरूप ग्रहण किया है। उन्हीं की पंक्तियों में धार्मिक आस्था का भाव इस प्रकार अभिव्यंजित हुआ है –

''इत चातक चित लाइ लखत हैं तेरे मुख को।
मधुर बारि शीतल की आशा धारे सुख को।।
क्यों इतनों तरसावत हौ निज प्रेमीगन को।
स्वाती लों पछताइ देहुगे जल सुखमन को।।''

इस प्रकार महाकवि प्रसाद ने चित्राधार में शरद पूर्णिमा, संध्या तारा, चन्द्रोदय, इन्द्रधनुष, नीरव प्रेम, विस्मृत प्रेम, विसर्जन मकरन्द बिन्दु, अयोध्या का उद्धार, प्रेमराज्य, वन मिलन अष्टमूर्ति, मानस, आदि शीर्षक कविताओं में भारतीय संस्कृति रत्नों का संचय कर अपने प्रतीकात्मक कथ्य को सम्प्रेषणीय बनाया है। प्रतीकों द्वारा आधुनिक मानवीय संवेदनाओं की युगानुरूप धार्मिक प्रस्तुति प्रसाद के कविता की मौलिकता का परिचायक है। ''प्रेमपथिक'' काव्य में कवि ने धार्मिक प्रतीक के प्रसंग में लीलामय के अद्‌भुत लीला का यशोगान इस प्रकार किया है –

''लीलामय की अद्‌भुत लीला किससे जानी जाती है
कौन उठा सकता है धुँधला–पट भविष्य का जीवन में
जिस मंदिर में देख रहे हो जलता रहता है कर्पूर
कौन बता सकता है उसमें तेल न जलने पावेगा।।''

धार्मिक प्रतीक के माध्यम से कवि का भावबोध अवलोकनीय है –

''भद्र पथिक ! अब रात हो गयी, पथ चलने का समय नहीं
पर्ण कुटीर पवित्र तुम्हारा ही है, कुछ विश्राम करो
फल, जल, आसन सभी मिलेगा जो प्रस्तुत है मेरे पास
और तुम्हारी शांति न कोई भंग करेगा तृण भर भी।''

नौका पार लगाना का प्रतीकात्मक भाव उद्धार करना है। कवि प्रसाद ने 'कानन कुसुम' काव्य के वन्दना शीर्षक कविता में इस तथ्य को इस प्रकार उद्‌घाटित किया है –

''जयति प्रेम–निधि ! जिसकी करुणा नौका पार लगाती है
जयति महासंगीत ! विश्व–वीणा जिसकी ध्वनि गाती है
कादम्बिनी कृपा की जिसकी सुधा–नीर बरसाती है
भव–कानन की धरा हरित हो जिससे शोभा पाती है
निर्विकार लीलामय ! तेरी शक्ति न जानी जाती है
ओतप्रोत हो तो भी सबकी वाणी गुण–गण गाती है।।''

विश्लेषण –

धार्मिक दृष्टि से कवि ने मन्दिर की स्वायत्तता को अक्षुण्य स्वरूप प्रदान किया है। धार्मिक परिवेश में कवि का मानवीय भाव प्रतीक विधान को अभिव्यंजित करता है –

''जिस मन्दिर का द्वार सदा उन्मुक्त रहा है
जिस मंदिर में रंक नरेश समान रहा है
जिसके हैं आराम प्रकृति–कानन ही सारे
जिस मंदिर के दीप इन्दु, दिनकर औ' तारे
उस मंदिर के नाथ को, निरूपम निरमय स्वस्थ को
नमस्कार मेरा सदा पूरे विश्व–गृहस्थ को।।''

इस प्रकार महाकवि प्रसाद ने ''कानन कुसुम'' काव्य में करुणा महाक्रीड़ा, कुंज, प्रभात, वसन्त, हृदय वंदना, ग्रीष्म, ताड़ित मलिना, सरोज, जल, दीप, किंजल पुंज, पवन, प्रभा, वय आकाश, नीरद, निशीथ, पतित पावन, गंगा, मोहन, भवसागर, धर्मनीति आदि शब्दों का प्रतीकात्मक अर्थ व्यवहार किया है। यथा–

भीति का नाशक हो तव धर्म, नहीं तो रहा लुटेरा–कर्म
दुखी है मानव–देव अधीर–देखकर भीषण शान्त समुद्र
व्यथित बैठा है उसके तीर–और क्या विष पी लेगा रुद्र
करेगा तब वह ताण्डव–नृत्य, अरे दुर्बल तर्कों के भृत्य
गुंजरित होगा श्रृंगीनाद, धूसरित भव बेला में मन्द्र
कँपैंगे सब सूत्रों के पाद, युक्तियाँ सोवेंगी निस्तन्द्र
पंचभूतों को दे आनन्दअ तभी मुखरित होगा वह छन्द।।''

जल–प्लावन भारतीय इतिहास में एक ऐसी ही प्राचीन घटना है, जिसने मनु को देवों से विलक्षण, मानवों की एक भिन्न संस्कृति प्रतिष्ठित करने का अवसर दिया। वह इतिहास ही है। 'मानवे वै प्रातः' इत्यादि से इस घटना का उल्लेख शतपथ ब्राह्मण के आठवें अध्याय में मिलता है। देवगण के उच्छृंखल स्वभाव, निर्बाध आत्मतुष्टि में अन्तिम अध्याय लगा और मानवीय भाव अर्थात् श्रद्धा और मनन का समन्वय होकर प्राणी को एक नये युग की सूचना मिली। इस मन्वन्तर के प्रवर्तक मनु हुए।

अनुमान किया जा सकता है कि बुद्धि का विकास, राज्य स्थापना इत्यादि इड़ा के प्रभाव से ही मनु ने किया। फिर तो इड़ा पर भी अधिकार करने की चेष्टा के कारण मनु को देवगण का कोपभाजन होना पड़ा। 'तद्वै देवानां आग आस' (7–4–शतपथ) इस अपराध के कारण उन्हें दण्ड, भोगना पड़ा। तंरुद्रोऽभ्यावत्य विव्याध'' (7–4–शतपथ) इड़ा देवताओं की स्वसा थी। मनुष्यों को चतना प्रदान करने वाली थी। इसीलिए यज्ञों में इड़ा कर्म होता है। यह इड़ा का बुद्धिवाद श्रद्धा और मनु के बीच व्यवधान बनाने में सहायक होता है। फिर बुद्धिवाद के विकास में, अधिक सुख की खोज में, दुःख मिलना स्वाभाविक है। यह आख्यान इतना प्राचीन है कि इतिहास में रूपक का भी अद्भुत मिश्रण हो गया है। इसीलिए मनु, श्रद्धा और इड़ा इत्यादि अपनाा ऐतिहासिक अस्तित्व रखते हुए, सांकेतिक अर्थ की भी अभिव्यक्ति करें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं। मनु अर्थात् मन के दोनों पक्ष, हृदय और मस्तिष्क का सम्बन्ध क्रमशः श्रद्धा और इड़ा से भी सरलता से लग जाता है। ''श्रद्धा हृदय्य याकूल्या श्रद्धया विन्दते वसु'' (ऋग्वेद 10–151–4) इन्हीं सबके आधार पर 'कामायनी' की कथा सृष्टि हुई है।)

कामायनी के चिन्ता सर्ग में महाकवि ने देव, यजन, पशु, यज्ञ, पुर्णाहुति जैसे धार्मिक प्रतीकों का उल्लेख किया है –

''देव–यजन के पशु यज्ञों की,वह पूर्णाहुति की ज्वाला।''

आशा सर्ग में विश्वदेव, सविता, पूषा, सोम, पवन, वरुण जैसे धार्मिक उपादानों के माध्यम से प्रसाद जी ने धार्मिक प्रतीकों का विधान किया है। उदाहरणार्थ –

''विश्वदेव, सविता या पूषा, सोम, मरुत, चंचल पवमान;
तरुण आदि सब घूम रहे हैं, किसके शासन में अम्लान?''

कामायनी में पाक यज्ञ और वन्हिज्वाला, अग्निहोत्र, अवशिष्ट अन्न जैसे धार्मिक प्रतीकों की योजना दृष्टव्य है –

''पाक यज्ञ करना निश्चित कर, लगे शामियों को चुनने;
उधर वन्हि ज्वाला भी अपना, लगी धूम पट थी बुनने।।
× × × × ×
अग्निहोत्र अवशिष्ट अन्न कुछ, कहीं दूर रख आते थे;
होगा इससे तृप्त अपरिचित, समझ सहज सुख पाते थे।।''

निष्कर्ष –

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि प्रसाद के काव्य में प्रतीकों का प्रयोग काव्यगत दृष्टि से हुआ है। कामायनी और चित्राधार में प्रतीक संयोजन का धार्मिक स्वरूप एक व्यवस्थित रूप में मिलता है। प्रसाद ने अपने कविता संग्रहों एवं शीर्षकों का नाम भी प्रतीकात्मक अर्थ देने लगते हैं। महाकवि प्रसाद ने सूर्य, ऊषा, तारक, नीलगगन, उदय–अस्त, आकाश, निर्झर, विभावरी, ग्रीष्म, मधुमास, शशि, मुस्कान, ज्योतिषकण, घनीरात, मरण सेज, क्षण भंगुर, अर्न्तदीपक, ज्योति, दिन, रात, ज्वाला, अन्धकार तड़ित, वेदना, अर्न्तदर्शन, आँखों में आँसू, अनेक ऐसे प्रतीकों के प्रयोग हुए हैं कि ऐसा लगता है कि प्रसाद की कविता में प्रतीक उनकी काव्य चेतना में एक अनिवार्य अंग बन गया है। प्रसाद ने इन प्रतीकों का चयन सोद्देश्य किया है। आकाश, निर्झर, गृष्म और मधुमास को कवि ने जीवन के लिए तथा ऊषा को 'नारी' के लिए प्रतीकात्मक अर्थ ध्वनित करते हैं।

संदर्भ –

गजानन्द माधव मुक्तिबोध	:	कामायनी : एक पुनर्विचार समीक्षा की समस्याएँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
कुमार विमल	:	छायावाद का सौन्दर्य शास्त्रीय अध्ययन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
श्याम किशोर मिश्र	:	छायावाद की परिक्रमा, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2010
डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी	:	कामायनी का पुनर्मूल्यांकन, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2010
विश्वम्भर 'मानव'	:	कामायनी टीका, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2010.